Journal Homepage: -www.journalijar.com
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)
Article DOI:10.21474/IJAR01/23030
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23030
ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

*CONFERENCE PAPER*

# हिंदी सिनेमा (1954-1969) में लताजी के पार्श्वगायन में ब्रह्मांड की रूपरेखा : लैंगिक समन्वय के परिप्रेक्ष्य में विशेष अध्ययन

**आरसी प्रसाद झा[1] and रानी कुमारी[2]**

1. अनुसंधान सहयोगी, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, प्रतानपगर, उदयपुर -313001 (राज.), एवं.
2. एम.ए. (संगीत गायन), श्रमजीवी सायंकालीन महाविद्यालय, टाउनहॉल, उदयपुर-313001 (राज.).

## *Manuscript Info*

***Manuscript History***
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

***Key words:-***
पार्श्वगायन, महिला, लताजी, समन्वय, सशक्तिकरण

## *Abstract*

वर्तमान आलेख का उद्देश्य है कि लता मंगेशकर के पार्श्वगायन के आधार पर उनके गायन में ब्रह्मांड की रूपरेखा को जाना जाए। साथ ही, लताजी के गीतों में निहित लैंगिक (महिला) समन्वय को समझा जाए। इस आलेख के लिए 1954 ई. से 1969 तक की निर्मित ऐसी हिंदी सिनेमा को रखा गया जिसमें लताजी पार्श्वगायिका के तौर पर गायी थीं। वर्तमान आलेख पूर्ण रूप से द्वितीयक स्रोत पर आधारित है। वर्तमान आलेख के लिए कुल 6 हिंदी सिनेमा एवं इनके 11 संगीत के आधार पर आलेख तैयार किया गया है। 3 गीतों के आधार पर लैंगिक(महिला) समन्वय को जानने का प्रयास किया गयाहै। शोधपत्र की लेखन विधि के रूप में गीतों का विवरणात्मक विधि एवं विषय-विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। आलेख के परिणाम इंगित करते हैं कि लताजी ब्रह्मांड के विभिन्न अवयवों, जैसे-चांद (चांदनी), बादर (बादल), तारा (तारे, तारों), सितारा, आसमान (नीलगगन), आदि की चर्चा अपने गीत में की हैं। लताजी ने रूठे प्रेमी-प्रेमिका व पति-पत्नी को मनाने व और अधिक मजबूत व घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए ब्रह्मांड के विभिन्न तत्वों को अपने गीतों में समावेश की हैं। वे अपने गीतों में दांपत्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए चांद, चांदनी, तारा, आसमान, सितारा, आदि को प्रतीक एवं उदाहरण के रूप में उपयोग में ली हैं। लताजी अपने गीतों के माध्यम से दांपत्य जीवन को चिरस्थाई बनाने पर जोर दी हैं। लताजी की गीतें संदेश देती हैं कि दंपति के लिए मधुरमय संबंध, आपसी सामंजस्य व वैचारिक आदान-प्रदान आवश्यक है। लताजी के गीतों में मुसीबत में धैर्य रखने की शिक्षा भी इन गीतों में निहित है। लताजी की गीतों में आपसी व दांपत्य जीवन के संबंध के समन्वय दिखते हैं।

*"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."*

**Corresponding Author:- आरसी प्रसाद झा**
**Address:-** अनुसंधान सहयोगी, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, प्रतानपगर, उदयपुर -313001 (राज.), एवं.

## Introduction: -

ब्रह्मांड का निर्माण 13727 अरब वर्ष पूर्व से माना जाता है। ब्रह्मांड का न तो कोई किनारा है और न ही कोई केन्द्र है। विभिन्न स्रोतों से खोजों से पता चलता है कि ब्रह्मांड की शुरुआत से ही अन्तरिक्ष का विस्तार हुआ है। ऐसा माना जाता है कि आकाशगंगाएं, तारे, आदि सब ब्रह्मांड का ही भाग है। ब्रह्मांड में वैसी चीज का भी निर्माण हुआ है जो कि दिखाई नहीं देते। ब्रह्मांड में सम्पूर्ण अन्तरिक्ष समाहित है। ब्रह्मांड में सभी ग्रह, नक्षत्र, तारे, मन्दाकिनी, अपरमाणविक कण, आदि समाहित है। इसी में सारा पदार्थ और सारी उर्जा सम्मिलित है। ब्रह्मांड में पृथ्वी और उसमें रहने वाले सभी जीवित प्राणी, चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह (बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, आदि), तारे, आदि शामिल हैं। ब्रह्मांड का निर्माण करोड़ों तारे, आकाशगंगा, ग्रह-नक्षत्र से मिलकर बना है। अतः इस दृष्टिकोण से चांद, बादल, तारे, सितारा, आसमान, आदि को ब्रह्मांण की श्रेणी में रखा जा सकता है। वसंत (2024) ने अपने पुस्तक में उल्लेख किया है कि हजरत मूसा के पास एक पत्थर था। संयोगवश उन्हें प्यास लगी और वर्षा भी उसी समय हो गई। जब वर्षा का पानी उस पत्थर पर गिरा तब ही उस पत्थर के सात टुकड़े हो गए और उसमें सात अलग-अलग प्रकार की ध्वनि निकली। यही सात ध्वनि संगीत की उत्पत्ति में सहायक रहा है। प्रसाद (2022) ने अपने आलेख में उल्लेख किया है कि नदियों की कल-कल ध्वनि एवं हवा के झोंके ने संगीत की उत्पत्ति में सहायक रहा है। जोशी (1957) ने अपने पुस्तक में बताया है कि सरिताओं की उंची-नीची लहरों से, सागर की तरंगों से, पक्षियों के कलरव से, चांद और रजनी की प्रबुद्ध क्रीड़ाओं से संगीत के मधुर स्वर बने हैं। शर्मा (2012) के अनुसार, स्वाति नामक एक ऋषि जब पानी के लिए एक सरोवर गए। वहां जाते ही वर्षा प्रारंभ हो गया। यह वर्षा प्रारंभ में मंद एवं बाद में तीव्र हो गया। मंद एवं तीव्र वर्षा का पानी जब कमल के पंखुरियों पर पड़ता तब ही इसके ध्वनि में भी उसी अनुसार परिवर्तन हो कर ध्वनि निकलता था। यह संगीत के साथ-साथ वाद्य-यंत्र की उत्पत्ति में भी सहायक हुआ। तानसेन के गीत गाने के समय भी कलियां फूल बन जाती थी। इसी प्रकार, ओंकार नाथ ठाकुर जब भैरवी गाते थे उस समय पौधे और पत्ति चमकने लगते थे। इसी प्रकार, टी.एन. सिंह के बारे में कहा जाता है कि जब वे राग गाते थे तब किसी पौधे के बीज, धान, सरसों, चना, सेम, आदि पौधों की वृद्धि शीघ्र हो जाती थी (श्रीवास्तव, 2005)। संगीत का प्रभाव पेड़-पौधों के विकास एवं वृद्धि पर पड़ता है। 'गज-परन' पखावज बजानेवाले अपने इस कला से मजबूत एवं बलशाही हाथी को भी नियंत्रित कर लेते हैं। तानसेन की संगीत सुनकर मृग की झुंड उनके पास आ जाते थे (कुमार, 1981)। बंसल (2022) ने उल्लेख किया है कि राग भूपाली में ध्रुपद शैली की एक सरल बंदिश है- तू ही सूर्य, तू ही चंद्र। यह बंदिश सम से शुरू होती है। अतः स्पष्ट है कि संगीत, ब्रह्मांड (सूर्य, चंद्र, चांद, आदि), प्रकृति, पशु-पक्षी, जीव-जंतु, आदि सबको प्रभावित करती है और उससे संगीत स्वयं भी प्रभावित होती है।

**लता मंगेशकर : संक्षिप्त परिचय:-**

लता मंगेशकर (लता दीदी) का जन्म इंदौर में 28 सितंबर 1929 ई. को हुआ था। लताजी बाल्यावस्था से पार्श्वगायन प्रारंभ कर दीं और अपने जीवन के अंतिम काल (मृत्यु : 6 फरवरी 2022) तक कई हिट गाने गाए। वे पार्श्वगायिका के रूप में विख्यात रही हैं। लताजी के बारे में यह भी दुःखद घटना रही है कि इनके पिताजी के मृत्योपरांत मात्र 13 वर्ष की अवस्था में घर के खर्च पूरा करने के लिए फिल्म में आईं (वेद, 2018)। इन्हें 2001 ई. में भारत रत्न का सम्मान प्राप्त हुआ। लताजी छः दशकों तक पार्श्वगायन का कार्य कीं एवं इस अवधि में काफी उपलब्धियां पाईं। लताजी एकमात्र ऐसी जीवित व्यक्ति थीं जिनके नाम से पुरस्कार दिए जाते हैं। लताजी ने सिनेमा में महिलाओं के प्रति इससे अलग पहचान दिलाई। लताजी कई भाषाओं में फ़िल्मी और गैर-फ़िल्मी गीतें (गाने)गायी हैं। लताजी अपनी जीवन के अंतिम सांस के समय तक 30000 से अधिक गीतें गा चुकी थीं। लताजी फिल्म के साथ-साथ भजन, गीत, गजल, आदि में भी अपनी पहचान बनाई थीं। लताजी खमाज, पीलू, पहाड़ी, यमन, तोड़ी, बागेश्री, आदि का प्रयोग विभिन्न सिनेमा एवं गैर-फिल्मों के गीतोंमें किया है (तापसी, 2015)।

अतः वर्तमान आलेख का उद्देश्य है कि 1954 ई. से 1969 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा में पार्श्वगायिका 'लता मंगेशकर' के गेय संगीत में ब्रह्मांड की रूपरेखा को जाना जाए। साथ ही, इस संगीत में निहित लैंगिक (महिला) समन्वय को समझा जाए।

**शोध विधि:-**

**आंकड़े (गीत) संग्रहण के स्रोत:-**

वर्तमान आलेख में द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोत, जैसे कि- पुस्तक, शोध पत्रिका, इंटरनेट से प्राप्त सामग्री के आधार पर शोध आलेख तैयार गया है। वर्तमान आलेख के लिए सोशल मीडिया (ट्विटर, फेसबुक, इस्टाग्राम, यू-ट्यूब, आदि), इंटरनेट (विकिपिडिया, इंटरनेट से प्राप्त सामग्री, आदि), कारावके एवं प्रकशित लिखित सामग्री (शोधपत्रिका, पुस्तक, प्रकाशित रिपोर्ट, अप्रकाशित शोध डिसर्टेशन, आदि) को उपयोग में लिया गया है। विकिपिडिया एवं कारावके के माध्यम से गीतों के मूल संप्रत्यय को समझने एवं गीतों के बोल समझने में सहायता मिला है। कुल 11 गीतों में 7 कारावके एवं 4 गीतें यू-ट्युब से सुनने के आधार पर इस आलेख में अक्षरशः लिखा गया है। वर्तमान अध्ययन में तालिका सं. 3 के सभी गीतों का विश्लेषणात्मक एवं सूक्ष्य अध्ययन करने के उपरांत ही इसमें स्थान दिया गया है। जबकि, अन्य द्वितीयक स्रोत से प्राप्त सूचना को वर्तमान अध्ययन में केवल सूचनात्मक रूप से प्रयोग किया गया है। वर्तमान शोध लेखन में अध्ययनकर्ता द्वारा द्वितीयक स्रोत से प्राप्त सूचना का विश्लेषण किया गया है।

**चयनित सिनेमा एवं इसके निर्माण (रिलिज) के वर्ष**

वर्तमान आलेख लेखन के लिए 1954 ई. से 1969 ई.तक की रिलीज हुई ऐसी हिंदी सिनेमा को रखा गया जिसमें लताजी अपने पार्श्वगायन में ब्रह्मांड या इसके किसी-न-किसी अवयव की चर्चा कहीं-न-कहीं की थी।

**तालिका स. 1:चयनित सिनेमा एवं इसके निर्माण (रिलिज) के वर्ष**

| क्रम सं. | हिंदी सिनेमा का नाम | निर्मित वर्ष (रिलिज वर्ष) |
|---|---|---|
| 1 | धरती कहे पुकार के | 1969 |
| 2 | हरियाली और रास्ता | 1962 |
| 3 | उपकार | 1967 |
| 4 | मधुमती | 1958 |
| 5 | नागिन | 1954 |
| 6 | उजाला | 1959 |

अतः स्पष्ट है कि वर्तमान शोध आलेख लेखन के लिए 1954 ई. से लेकर 1969 ई. तक के वैसे गीतों का चयन किया गया जिसमें लताजी ब्रह्मांड के अवयवों, जैसे-चांद (चांदनी), बादर (बादल), तारा (तारे, तारों), सितारा, आसमान (नीलगगन), आदि की चर्चा पूरे गीत में कहीं-न-कहीं की थीं। इसके बावजूद, लताजी अपने जीवन में किसी भी संगीत में केवल 'ब्रह्मांड' शब्द का उल्लेख संभवतः नहीं कीं। उस समय के दौर में हिंदी सिनेमा- नागिन दो बने थे। पहली नागिन 1954 ई. में एवं दूसरी नागिन 1976 ई. में बनी थी। संयोगवश, उन दोनों नागिन में लताजी पार्श्वगायिका थीं। लेकिन, वर्तमान शोध आलेख के लेखन के लिए 1954 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- नागिन को रखा गया है।

**चयनित गीत एवं इसकी अवधि:-**

कुल 11 गीतों के आधार पर वर्तमान शोध पत्र तैयार किया गया है। यह सभी गीतें उपरोक्त 6 हिंदी सिनेमा से लिए गए हैं। साथ ही, 3 गीतों के आधार पर लैंगिक (महिला) समन्वयन को जानने का प्रयास किया गया है। कम-से-कम 1 गीत एवं अधिक से अधिक 4 गीतें उपरोक्त हिंदी सिनेमा से लिए गए हैं। सभी गीत लताजी या तो अकेले या सह-पार्श्वगायक के साथ गाई हैं। 7 गीतें लताजी अकेले एवं 3 गीत मुकेश के साथ एवं 1 गीत हेमंत कुमार के साथ गाई हैं।

**तालिका स. 2 : चयनित गीत एवं इसकी अवधि**

| क्रम सं. | गीत के बोल | संगीत की कुल अवधि(लगभग) | क्रम सं. | गीत के बोल | संगीत की कुल अवधि (लगभग) |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | जो हम, तुम चोरी से | 5 मि. 34 से. | 7 | अरि छोड़ दे पतंग | 3 मि. 30 से. |
| 2 | लाखों तारे आसमान में | 4 मि. 45 से. | 8 | मेरा बदली में छुप गया चांद | 3 मि. 15 से. |
| 3 | ये हरियाली और रास्ता | 5 मि. 14 से. | 9 | उंची-उंची दुनिया की दीवारें | 4 मि. 44 से. |
| 4 | हर खुशी हो वहां | 3 मि. 35 से. | 10 | झूमता मौसम मस्त महीना | 3 मि. 30 से. |
| 5 | जुल्मी संग आंख लड़ी | 3 मि. 27 से. | 11 | दुनिया वालों से दूर | 4 मि. 16 से. |
| 6 | मेरा दिल ये पुकारे आजा | 3 मि. 40 से. | | | |

अतः स्पष्ट है कि लताजी द्वारा ब्रह्मांड के अवयवों के प्रति गाए हुए गीतों में सबसे अधिक समय (5 मिनट 34 सेकंड) का रहा है जो कि यह गीत- जो हम, तुम चोरी से, यह सबसे लंबा गाना था। इसी प्रकार, मेरा बदली में छुप गया चांद, का गीत सबसे कम समय (3 मिनट 15 सेकंड) का है। उपरोक्त सभी 11 गीतों में 45.30 सेकंड का कुल समय लगा है जो कि औसतन प्रति गीत में 4 मिनट 12 सेकंड का समय लगा है। सामान्यतः इन गीतों में लगे समय में संगीत का गायन एवं वादन दोनों सम्मिलित हैं। वर्तमान शोध आलेख के लिए आंकड़ों (अर्थात् गीतों) के संग्रोहपरांत पाया गया कि सभी गीतें वादन के सहयोग से गाए गए हैं। यदि वादन को गीत से हटा दिया जाए तो लगभग 30-40 प्रतिशत समय कम लग सकते थे।

## कार्य विधि प्रक्रिया:-

वर्तमान आलेख लेखन के लिए उपरोक्त उल्लेखित हिंदी सिनेमा के गीतों का विवरणात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। कारावके के सहयोग से गीतों के मूल शब्दों को अक्षरशः देखकर एवं यू-टयूब पर इन गीतों को कई बार (3-4 बार) सुनने के उपरांत शोध लेखन का कार्य किया गया है। शोधपत्र की लेखन विधि के रूप में गीतों का विवरणात्मक विधि एवं विषय-विश्लेषण विधि रहा है। प्रति गीतों को पुनरावृत्ति रूप से सुनने व सूक्ष्म रूप से समझने, तुलना करने एवं गीत के भावार्थ को समझने में लगभग एक से सावा घंटा समय प्रत्येक गीतों पर लगा है। वर्तमान आलेख लेखन के लिए पूर्ण रूप से गुणणात्मक विधि (क्वालिटेटिव मेथड) को प्रयोग में लिया गया है।

## परिणाम एवं विवेचन:-

**तालिका सं. 3: 1964 ई. से 1969 ई. तक की अवधि के हिंदी सिनेमा में पार्श्वगायिका 'लता मंगेशकर' की गीत में ब्रह्मांड के अवयव से संबंधित सूचना**

| क्रम सं. | हिंदी सिनेमा का नाम | संगीत निर्देशक | गीतकार | संगीत के बोल | पार्श्वगायक/ पार्श्वगायिका | संगीत में ब्रह्मांड |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | हरियाली और रास्ता | शंकर जयकिशन | शैलेन्द्र | लाखों तारे आसमान में | लताजी, मुकेश | आसमान, तारे |
| 2 | हरियाली और रास्ता | शंकर जयकिशन | शैलेन्द्र | ये हरियाली और रास्ता | लताजी | चांद |
| 3 | उपकार | कल्याणजी आनंदजी | गुलशन बावरा | हर खुशी हो वहां | लताजी | चांद, चांदनी |
| 4 | मधुमती | सलिल चौधरी | शैलेन्द्र | जुल्मी संग आंख लड़ी | लताजी | तारों |
| 5 | नागिन | हेमंत कुमार | राजेन्द्र कृष्ण | मेरा दिल ये पुकारे आजा | लताजी | चांद |
| 6 | नागिन | हेमंत कुमार | राजेन्द्र कृष्ण | अरि छोड़ दे पतंग | लताजी, हेमंत कुमार | नीलगगन |
| 7 | नागिन | हेमंत कुमार | राजेन्द्र कृष्ण | मेरा बदली में छुप गया | लताजी | चांद |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | चांद | | |
| 8 | नागिन | हेमंत कुमार | राजेन्द्र कृष्ण | उंची-उंची दुनिया की दीवारें | लताजी | तारों |
| 9 | उजाला | शंकर जयकिशन | हसरत जयपुरी | झूमता मौसम मस्त महीना | लताजी | चांद, मौसम |
| 10 | उजाला | शंकर जयकिशन | हसरत जयपुरी | दुनिया वालों से दूर | लताजी, मुकेश | चांदनी, तारों, सितारा |
| 11 | धरती कहे पुकार के | लक्ष्मीकांत प्यारेलाल | मजरूह सुल्तानपुरी | जो हम, तुम चोरी से | लताजी, मुकेश | बादर |

**लताजी के गीतों में आसमान :-**

लताजी अपने गीतों में आसमान शब्द को बहुत ही कम स्थान दिया है। वर्तमान आलेख में पाया गया कि लताजी हिंदी सिनेमा- हरियाली और रास्ता के एकमात्र गीत- लाखों तारे आसमान में, एक पूरी गीत आसमान के नाम कर दी हैं। इसके अलावा अन्य गीतों में लताजी ने आसमान शब्द को प्रयोग में नहीं के बराबर या कम प्रयोग में लिया है। इसी प्रकार, नागिन के एक गीत- अरि छोड़ दे पतंग, में नीलगगन शब्द को अपने संगीत में पिरोई हैं। हिंदी सिनेमा- नागिन, के एक गीत- अजी छोड़ दी पतंग में नीलगगन (आसमान) के बारे में कहती हैं कि-

**अरी छोड़ दे पतंग मेरी छोड़ दे.....**
**ऐसे छोड़ूं न बलमवा, नैनवा के डोर पहले जोड़ दे.....**
**आशाओं का मांझा, लगा रंगों प्यार से डोर.....**
**ना तोड पतंग, ना छोड़ दे .....**
**है किसमें कितना जोर जो काटे डोर ?**

उपरोक्त गीत लताजी एवं हेमंत कुमार एक-साथ गाए हैं। नागिन के इस गीत- अजी छोड़ दे पतंग में दांपत्य जीवन के बारे में तथ्यपूर्ण बातें की गई है। इस गीत में कहा गया है कि प्यार करनेवाले को एक-साथ रहना चाहिए। बल्कि, छोड़ना अर्थात् जुदाई नहीं होना चाहिए। दांपत्य जीवन में हमेशा आशावान होना चाहिए। दांपत्य जीवन में एवं प्यार करनेवालों को आपस में दूरी बनाने वाले भी बहुत परिस्थितियां आती हैं। लेकिन, संबंध इतना मजबूत होना चाहिए कि कोई भी कुछ कर ले, आपसी संबंध हमेशा एक-समान सकारात्मक एवं स्थाई होना चाहिए। लता (2019, 116, 118, 119) ने बताया है कि लताजी, सह-पार्श्वगायक- किशोर कुमार के साथ 1967 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- ज्वैल थीफ, के एक गीत- आसमान के नीचे हम अपने पीछे, (गीतकार-मजरूह सुल्तानपुरी) में गीत के एक बोल में आसमान को साक्षी मानकर प्रेमालाप की चर्चा हैं।

**लताजी के गीतों में तारा:-**

लताजीने हिंदी सिनेमा- मधुमती की एक गीत- जुल्मी संग आंख लड़ी एवं उजाला के एक गीत- दुनिया वालों से दूर, में भी तारों की चर्चा की हैं। 1956 ई. में निर्मित व चर्चित हिंदी सिनेमा- नागिन की एक गीत- दुनिया की दीवारों में तारों में गीत गायी हैं। लताजी हरियाली और रास्ता के एक गीत में तारे (अर्थात् एक से अधिक तारा) के बारे में गीतों में व्यक्त करती हैं-

**लाखों तारे आसमान में**
**मगर ढूंढे ना मिला**

उपरोक्त गीत में लताजी एवं मुकेश एक-साथ बताना चाह रही हैं कि प्रेमियों और प्रेमिकाओं की इस दुनिया में प्रेम करनेवालों की कमी नहीं है। लेकिन, अपने अनुसार मिलना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। उन दोनों ने आसमान में कई तारों अर्थात् कई लोगों के होने की बात करते हैं। जैसे आसमान में कई तारे दिखते हैं। वैसे ही कई लोग प्यार चाहते हैं। अतः उनमें से एक अच्छा तारा अर्थात् एक अच्छे

प्रेमी या प्रेमिका ढूंढना ही एक सच्ची तलाश पूरी मानी जाती है। तारे यहां पर उदाहरण व प्रतीक के रूप में प्रयोग में लिए गए हैं। 1954 ई. में निर्मित हिंनदी सिनेमा- बादशाह, के एक गीत- आ नीले गगन के तले, में (गायक- हसरत जयपुरी) एवं 1954 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- नास्तिक, के एक गीत- गगन झनझना रहा पवन सनसना रहा, (गीतकार- प्रदीप) में लताजी और हेमंत कुमार दोनों ही एक-साथ गीत गाए थे जिसमें उन्होंने प्रेमालाप का स्थान गगन पर केन्द्रित कर गीत गाए हैं। इसी प्रकार, 1964 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- सती सावित्री, के एक गीत में- तुम गगन के चंद्रमा, (गीतकार- भरत व्यास) में लताजी एवं मन्ना डे एक-साथ गीत गाए हैं। इस गीत में प्रेमी को गगन के चंद्रमा अर्थात् प्रेमी को अतिमहत्वपूर्ण व्यक्तित्व के बारे में गीत के माध्यम से दर्शाया गया है। लताजी ने हिंदी सिनेमा- मधुमती के एक गीत- जुल्मी संग आंख लड़ी, में वह तारों की छांहों में बुलाए, पर प्रकाश डाल रही हैं। लताजी यहां पर जुल्मी, रोग बढा जाए, पागल करने, आदि की चर्चा की हैं। लताजी यहां प्रतिकूल परिस्थिति में भी सामंजस्य करने पर जोर दे रही हैं।

**लताजी के गीतों में चांद एवं चांदनी:-**

लताजी ने हिंदी सिनेमा-उजाला के एक गीत- झूमता मौसम मस्त महीना, हरियाली और रास्ता के एक गीत- ये हरियाली और रास्ता, उपकार के एक गीत- हर खुशी है जहां, नागिन के दो गीत-मेरा दिल ये पुकारे आजा, एवं मेरा बदली में छुप गया चांद, में चांद का उल्लेख की हैं। इसी प्रकार, लताजी ने हिंदी सिनेमा- उजाला के एक गीत- दुनिया वालों से दूर, में चांदनी शब्द का उल्लेख की हैं। लताजी ने हरियाली और रास्ता के एक गीत में चांद की चर्चा इस प्रकार की हैं-

**मेरा तेरा जीवन भर का वास्ता**
**उजाला चांद के तन में**

अतः स्पष्ट है कि लताजी इस गीत के माध्यम से कह रही हैं कि जैसे चांद में हमेशा उजाला ही होता हैं वैसे ही हम दोनों अर्थात् एक युगल में जीवन भर का वास्ता उजालामय अर्थात् अच्छा रहे, बेदाग रहे और अंधकारमुक्त रहे। लताजी ने उपकार के एक गीत- हर खुशी है जहां, में संदेश दे रही हैं। जो कि इस प्रकार है-

**चांदनी हो जहां**
**तू जहां भी हो**
**रहे हर खुशी वहां**

लताजी यहां इस गीत के माध्यम से कहना चाहती हैं कि जो चांदनी की पहचान है, वह पहचान हमें रखनी ही चाहिए व उसे हमें खोना नहीं चाहिए। नहीं मिलने की स्थिति में जीवन में असंतुलन नहीं आना चाहिए। कभी-कभी हमें मनपसंद इच्छायें पूरी नहीं हो पाती हैं। चांदनी एक उदाहरण एवं प्रतीक के रूप में गीतों में लिया गया है। यहां हमें विपरीत परिस्थिति में चांदनी से सीखने के लिए अनुरोध इस गीत में दिख रहा है। इस गीत में एक स्थान पर 'चांद धुंधला' शब्द आया है। जिसका अर्थ होता है, कुछ विपरीत परिस्थितियों का आना। ऐसी परिस्थिति में लताजी गीत के माध्यम से जीवन में संतुलन रखने के लिए संदेश दे रही हैं। लताजी के इसी गीत के अनुसार, चांद में धुंधला हट भी जाता है। अतः अपने जिंदगी में इस धुंधले से निकलने की आवश्यकता है। लता (2019, 108, 111, 116, 127) ने बताया है कि लताजी ने 1957 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- पेइंग गेस्ट, के एक गीत- चांद फिर निकला, (गीतकार- मजरूह सुल्तानपुरी), 1971 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- रेश्मा और शेरा, के एक गीत- तू चंदा मैं चांदनी, (गीतकार- बालकवि बैरागी) एवं 1950 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- प्यार की मंजिल, के एक गीत- ए चांद जरा सुन ले, (गीतकार- शेवर रिजवी) में भी चांद का उल्लेख की हैं। इसी प्रकार, लताजी, सह –पार्श्वगायक- किशोर कुमार के साथ 1953 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- आगोश के एक गीत- तू है चंदा तो मैं हूं चकोर, (गीतकार-इन्दीवर) में गीत के एक बोल में प्रेमी को चंदा के रूप में एवं प्रेमिका स्वयं को चकोर के रूप में बता रहे हैं। इसी प्रकार, 1957 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- शादरा के एक गीत में- ओ चांद जहां वो जाएं, तू भी साथ, (गीतकार- राजेन्द्र कृष्ण) में लताजी अपनी बहन आशा भोंसले के साथ गीत गाई हैं। शर्मा (2006) ने अपने पुस्तक

में उल्लेख किया है कि 1948 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- जिद्दी में लताजी ने 'चंदा जा रे जा'' गाई थीं। लेकिन, यह गीत विरह गीत की श्रेणी में होने के कारण बहुत चर्चित नहीं हो पाई।

लता (2019, पृ. 83, 89) ने अपने पुस्तक में उल्लेख किया है कि लताजी ने 1953 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- आकाश के एक गीत में- सो गई चांदनी जाग उठी...., (गीतकार-मजरूह सुल्तानपुरी, सत्येन्द्र एवं प्रेम धवन) में भी चांदनी पर जोर दिया है। यह गीत अनिल विश्वास द्वारा निर्देशित गीतों में से एक रहा है। हिंदी सिनेमा- उपकार के एक गीत- हर खुशी हो वहां, में लताजी वियोग एवं विरह की बात कर रही हैं। लताजी अपने इस गीत के माध्यम से कह रही हैं कि जीवनसाथी यदि विकट व प्रतिकूल परिस्थिति, आदि में भी रहे तो जीवनसंगिनी को साथ देना चाहिंए। कभी-कभी अपनों के लिए अपनी खुशी छोड़ देनी चाहिए। लताजी यहां प्रेम में वियोग को स्वीकारने की बात करती हैं।

## लताजी के गीतों में बादल:-

लताजी के गीतों में बादल, बादली, बादर, बादरी, शब्द का उल्लेख मिलता है। वास्तव में, गानों के लय के अनुसार बादल को बादर व बादली को बादरी कहा गया है। लताजी ने हिंदी सिनेमा- धरती कहे पुकार के एक गीत- जो हम, तुम चोरी से, में बादर शब्द का प्रयोग की हैं। लताजी ने हिंदी सिनेमा-धरती कहे पुकार के, में बादर (शुद्ध शब्द बादल) के बारे में बताई हैं कि-

**हम चोरी से, बंधे एक डोरी से.....**
**बादर पवन पुकारे, उलफत में भी जीते**
**अनाड़ी भी न हारे।**

उपरोक्त गीत लताजी एवं मुकेश सह-**पार्श्व**गायन एक-साथ गाए थे। इस गीत के विश्लेषणोपरांत यह पाया गया कि भले ही किसी को इस प्रणय संबंध के बारे में पता नहीं हो। लेकिन, बादर अर्थात् बादल सब कुछ देख रहा है। यहां पर बादल साक्ष्य का कार्य कर रहे हैं जो कि उन्हें अर्थात् बादर को इस प्रेम संबंध का पता है। यह गीत परोक्ष रूप से यह संदेश देती है कि प्रेमी-प्रेमिका को यह नहीं समझना चाहिए कि कोई नहीं देख रहा है बल्कि प्रेम विश्वास का ही नाम है और इस संबंध में धोखा की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। लता (2019, पृ. 104, 111) ने अपने पुस्तक में उल्लेख किया है कि लताजी ने 1961 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- छोटे नवाब के एक गीत में- घर आजा घर आए बदरा सांवरीया, (गीतकार-शैलेन्द्र), 1972 ई. में निर्मित हिंदी सिनेमा- मान जाईए, के एक गीत- ओ मितवा बदरा छाए रे, (गीतकार- नक्श लयालपुरी) एवं 1966 ई. में निर्मित पति-पत्नी के एक गीत- काजे बदरवा रे, (गीतकार- आनंद बख्शी) में बदरा व बदरवा अर्थात् बादल पर विशेष जोर दी हैं। हिंदी सिनेमा- धरती कहे पुकार के, के एक गीत- जो हम तुम चोरी से, में लताजी बता रही हैं कि-

**देखा बादर आए, पवन के भी पुकारे।**
**उल्फत में भी जीए, अनाड़ी भी न हारे।**

उपरोक्त गीत में लताजी एवं मुकेश परस्पर प्रत्योत्तर कर रहे हैं। इस गीत में श्रंगार भाव छिपा है। लताजी एवं मुकेश की यह गीत संदेश देती है कि दंपत्ति के लिए मधुरमय संबंध एवं आपसी सामंजस्य व आदान-प्रदान आवश्यक है।

## निष्कर्ष:-

लताजी ब्रह्मांड के विभिन्न अवयवों, जैसे-चांद (चांदनी), बादर (बादल), तारा (तारे, तारों), सितारा, आसमान (नीलगगन), आदि की चर्चा वे अपने संगीत में कहीं-न-कहीं की हैं। लताजी ने रूठे प्रेमी-प्रेमिका व पति-पत्नी को मनाने व और अधिक मजबूत संबंध बनाने के लिए ब्रह्मांड के विभिन्न तत्वों को अपने गीतों में समावेश की हैं। वे अपने गीतों में दांपत्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए चांद, चांदनी, तारा, आसमान, सितारा, आदि को प्रतीक एवं उदाहरण के रूप में उपयोग में ली हैं। वे अपने गीतों में दांपत्य जीवन को

सुखमय बनाने के लिए चांद, चांदनी, तारा, आसमान, सितारा, आदि को प्रतीक एवं उदाहरण के रूप में उपयोग में ली हैं। लताजी अपने गीतों के माध्यम से दांपत्य जीवन को चिरस्थाई बनाने पर जोर दी हैं। लताजी की गीत संदेश देती है कि दंपत्ति के लिए मधुरमय संबंध एवं आपसी सामंजस्य व वैचारिक आदान-प्रदान आवश्यक है। लताजी के गीतों में मुसीबत में धैर्य रखने की शिक्षा भी उनके गीतों में निहित है। साथ ही, लताजी की संगीतों में आपसी व दांपत्य जीवन के संबंध के समन्वय दिखते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची:-


1. कुमार, एस. (1981). संगीत जानवरों पर भी असर डालता है. संगीत पत्रिका, सितंबर-1981, 43।
2. जोशी, उमेश (1957). भारतीय संगीत का इतिहास. फीरोजोबादः मानसरोवर प्रकाशन महल (पृष्ठ सं.-7)।
3. तापसी, नागराज (2015). *स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर के प्रमुख गैर-फिल्मी गीतों का शास्त्रीय अध्ययन.* अप्रकाशित पीएच.डी. शोध ग्रंथ. खैरागढ : संगीत विभाग, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय।
4. प्रसाद, जगबंधु (2022). संगीत तथा प्रकृति का परस्पर संबंध. *वागेश्वरी*, 36, 64-71।
5. बंसल, दीप्ति (2022). *हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बंदिश के निर्माण तत्व. वागेश्वरी*, 36, 72-77।
6. लता (2019). *हिंदी चित्रपट संगीत के विकास में भारत रत्न लता मंगेशकर का योगदान : सर्वेक्षण एवं विश्लेषण.* अप्रकाशित पीएच.डी. शोध ग्रंथ. अमृतसर : गुरू नानक देव विश्वविद्यालय (पृष्ठ सं.-83, 89, 104, 108, 111, 116, 118, 119, 127)।
7. वसंत (2024). *संगीत विशारद.* हाथरस : संगीत कार्यालय (पृष्ठ सं.-13)।
8. वेद, प्रकाश (2018). लता मंगेशकर का जीवन संघर्ष, व्यक्तित्व : एक संक्षिप्त अध्ययन (एक संघर्शशील स्त्री के विशेश संदर्भ में). *संगीत गेलेक्सी*, 7 (1), 81-87।
9. शर्मा, इंदु सौरभ (2006). *भारतीय फिल्म संगीत में ताल समन्वय.* नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स।
10. शर्मा, स्वतंत्र (2012). *भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण.* नई दिल्ली : मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (पृष्ठ सं.-5)।
11. श्रीवास्तव, संगीता (2005). संगीत का वनस्पतियों पर पड़नेवाले प्रभाव. *संगीत पत्रिका, सितंबर-*2005, 35।
12. https://hindi.news18.com/videos/entertainment/viral-social-juhi-chawla-nagma-pran-1992-superhit-bewaffa-se-waffa-blockbuster-song-hum-jaisa-kahin-aapko-dilber-na-milega-sung-by-lata-mangeshkar-10133057.html
13. https://hi.wikipedia.org/wiki/उपकार_(1967_फ़िल्म)
14. https://hi.wikipedia.org/wiki/नागिन_(1954_फ़िल्म)
15. https://hi.wikipedia.org/wiki/ब्रह्माण्ड
16. https://hi.wikipedia.org/wiki/मधुमती
17. https://hi.wikipedia.org/wiki/हरियाली_और_रास्ता
18. https://en.wikipedia.org/wiki/Ujala